वैज्ञानिक-विद्यार्थी संवाद

दिनांक – 08 फरवरी 2023

स्थान :- त्रिवेणी रोड, परेड ग्राउण्ड, प्रयागराज

भा0 वा0 अ0 शि0 प0–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत माघमेला क्षेत्र में वानिकी प्रचार–प्रसार हेतु भा.वा. अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र द्वारा लगाए गए वानिकी चेतना शिविर में दिनांक 08.02. 2023 को वैज्ञानिक–विद्यार्थी संवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ0 संजय सिंह ने अपने उद्‌बोधन में जलवायु परिवर्तन से होने वाले दुष्प्रभावों के अंतर्गत प्रभावित क्षेत्रों के रूप में पर्यावरण, जैव–विविधता, नदियां आदि पर प्रकाश डालते हुए पर्यावरण सुधार तथा आजीविका सृजन में वानिकी की भूमिका से अवगत कराया।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 अनीता तोमर ने जलवायु परिवर्तन से होने वाली हानियों तथा उनके निवारण पर चर्चा करते हुए विलुप्त होती फल प्रजातियों तथा खाद्य पदार्थों के रूप में मोटे अनाजों से अवगत कराया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 कुमुद दूबे ने मीलिया डूबिया पर चर्चा करते हुए इसके उपयोग पर भी प्रकाश डाला। डॉ0 दूबे ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में सूखा प्रभावित क्षेत्रों में वानिकी को बढ़ावा देने पर बल दिया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 अनुभा श्रीवास्तव ने अपने व्याख्यान में कृषिवानिकी के माध्यम से वनों को बढ़ावा देने के साथ किसानों को होने वाले लाभों से अवगत कराया।

कार्यक्रम के अन्त में वैज्ञानिक–विद्यार्थी संवाद के अंतर्गत वानिकी एवं पर्यावरण सम्बन्धित प्रश्नोत्तर किये गए साथ ही उपस्थित वानिकी प्रतिभागियों की जिज्ञासा को दूर किया गया। इसी क्रम में समूह गतिविधि में पर्यावरण के लिए जीवन के अंतर्गत संरक्षण अथवा उपभोग पर कार्य रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी कार्यक्रम में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के 50 से अधिक विद्यार्थी सम्मिलित हुए। केन्द्र के वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ0 एस0डी0 शुक्ला, रतन कुमार गुप्ता के साथ विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत विद्यार्थी तथा पीएच0डी0 छात्र–छात्राएं आदि उपस्थित रहे।

LiFE
दिनांक – 08 फरवरी 2023

LiFE
दिनांक – 08 फरवरी 2023

LiFE
वैज्ञानिक-विद्यार्थी संवाद
दिनांक – 08 फरवरी 2023

अमृत पीढ़ी देश को विकास की राह पर ले जाएगी

प्रयागराज, वरिष्ठ संवाददाता। आजादी के अमृत महोत्सव के क्रम में वानिकी प्रचार-प्रसार के लिए भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र की ओर से लगाए गए चेतना प्रसार शिविर का समापन हुआ।

लाइफ स्टाइल मिशन फॉर इंवायरमेंट विषय पर मुख्य अतिथि डॉ. संजय सिंह ने कहा कि आज हमें अपनी जीवनचार्य ऐसी बनानी चाहिए जिससे पर्यावरण का संरक्षण हो। उन्होंने कहा कि इसके लिए अमृत पीढ़ी (युवा पीढ़ी) पर बड़ी जिम्मेदारी होगी। इन्हें ऐसे-काम करने होंगे, जिससे पर्यावरण का संरक्षण हो और देश की अर्थव्यवस्था में प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल बढ़े। डॉ. सिंह ने जलवायु परिवर्तन से होने वाले दुष्प्रभावों के तहत प्रभावित क्षेत्रों के रूप में पर्यावरण, जैव-विविधता, नदियां आदि से अवगत कराते हुए वानिकी की पर्यावरण सुधार और आजीविका सृजन में भूमिका बताई। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने जलवायु परिवर्तन से होने वाली हानियों व उनके निवारण पर चर्चा की। विलुप्त होती फल प्रजातियों व खाद्य पदार्थों के रूप में मोटे अनाजों के महत्व को बताया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दुबे ने मीलिया डूबीया पर चर्चा की। डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने कृषि वानिकी के माध्यम से होने वाले लाभों से अवगत कराया।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र की ओर से लगाए गए चेतना प्रसार शिविर के समापन पर मौजूद विशेषज्ञ और विद्यार्थी।

समापन समारोह में वैज्ञानिक-विद्यार्थी संवाद के तौर पर प्रश्नोत्तर किये गए और सवालों के जवाब दिए गए। साथ ही समूह गतिविधि में पर्यावरण के लिए जीवन के अंतर्गत संरक्षण व उपभोग पर कार्य रिपोर्ट प्रस्तुत की। समारोह में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थी शामिल हुए। केंद्र के वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. एसडी शुक्ला, रतन गुप्ता व शोध छात्र उपस्थित रहे।

वैज्ञानिक-विद्यार्थी संवाद के साथ वानिकी चेतना शिविर का समापन

प्रयागराज(नि.सं)।आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत माघमेला क्षेत्र में वानिकी प्रचार - प्रसार हेतु भा0वा0अ0शि0प0- पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र द्वारा लगाए गए वानिकी चेतना प्रसार शिविर का समापन हुआ। कार्यक्रम के प्रारम्भ में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ0 संजय सिंह ने जलवायु परिवर्तन से होने वाले दुष्प्रभावों के अंतर्गत प्रभावित क्षेत्रों के रूप में पर्यावरण, जैव-विविधता, नदियाँ आदि से अवगत कराते हुए वानिकी की पर्यावरण सुधार और आजीविका सृजन में भूमिका बताई। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 अनीता तोमर ने जलवायु परिवर्तन से होने वाली हानियों तथा उनके निवारण पर चर्चा करते हुए विलुप्त होती फल प्रजातियों तथा खाद्य पदार्थों के रूप में मोटे अनाजों से अवगत कराया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 कुमुद दूबे ने मीलिया डूबीया पर चर्चा करते हुए इसके उपयोग पर भी प्रकाश डाला। डॉ0 दूबे ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में सूखा प्रभावित क्षेत्रों में वानिकी को बढ़ावा देने पर बल दिया। डॉ0 अनुभा श्रीवास्तव वरिष्ठ वैज्ञानिक ने अपने व्याख्यान में कृषिवानिकी के माध्यम से होने वाले लाभों से अवगत कराया। समापन समारोह में वैज्ञानिक-विद्यार्थी संवाद के तौर पर प्रश्नोत्तर किये गए तथा उपस्थित वानिकी जिज्ञासुओं को उनकी जिज्ञासाओं को दूर किया गया। साथ ही समूह गतिविधि में पर्यावरण के लिये जीवन के अन्तर्गत संरक्षण अथवा उपभोग पर कार्य रपट प्रस्तुत की ।समारोह में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के 50 से अधिक विद्यार्थी सम्मिलित हुए। केन्द्र के वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ0 एस0 डी0 शुक्ला, रतन गुप्ता के साथ विभिन्न प्रयोजनाओं में कार्यरत शोध छात्र आदि उपस्थित रहे।